प्रथम अध्याय:

"वर्ष 2003 की परिस्थितियाँ

एवं

'नया ज्ञानोदय' पत्रिका ।"

*****

प्रथम अध्याय :-"वर्ष - २००३ की परिस्थितियाँ एवं 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका।"

प्रस्तावना :-

साहित्य में समाज का प्रतिबिंब पडता है। समाज में विभिन्न प्रकार के कार्यव्यापार घटित होते हैं, कुछ प्रसंगों तथा घटनाओं का प्रभाव भावूक, संवेदनशील, सहृदयशील साहित्यकार के दिलो-दिमाग पर पडता हैं, ऐसा भावुक, संवेदनशील, सहृदयशील साहित्यकार साहित्य-सृजन करता हैं। साहित्य में समाज की युगीन परिस्थितियों का अंकन होता है। मनुष्य अपने मन में आए भावों को साहित्य में अभिव्यक्त करता हैं। इनमें से एक पक्ष सत्य का हे। सत्य के साथ मनोविनोद, बुद्धि की सहायता से कल्पना का सुंदर प्रयोग साहित्य में किया जाता हैं। साहित्य-सृजन करते समय भाव, कल्पना, बुद्धि और, शैली का प्रयोग किया जाता है। इनके सुंदर समन्वय से साहित्य की निर्मिति होती है। जिस युग में साहित्य-सृजन होता है उस काल की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक, परिस्थितियों का प्रतिबिंब साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। समसामयिक, विश्वस्तर की घटनाओं से साहित्य कैसे दूर रह सकता है ?

साहित्य सृजन के लिए मनुष्य के दिलो-दिमाग पर वहाँ के परिवेश का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। परिवेश के साथ ही साहित्यकार के विचार एवं मान्यताओं में परिवर्तन आता रहता है। इस बदलते युगीन परिवेश के कारण व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का उत्थान संभव होता है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध का विषय '' प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष, २००३ की '' नया ज्ञानोदय' ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन '' हैं। वर्ष, २००३ की परिस्थितियों पर प्रकाश डालते समय, इस वर्ष के करीब ३६५ दिनों में घटित घटनाओं, प्रसंगों

आदि पक्षों का आशय-विषय के दृष्टि से निम्नलिखित मुद्दों के आधारपर प्रकाश डाला जा रहा है ।

१. राजनीतिक परिस्थिति

२. सामाजिक परिस्थिति

३. आर्थिक परिस्थिति

४. धार्मिक परिस्थिति

५. साहित्यिक परिस्थिति

६. शैक्षिक परिस्थिति

७. वर्ष, २००३ में घटित विशेष उल्लेखनीय घटना प्रसंग, तथा उपर्युक्त परिस्थितियों का विवरण निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. **राजनीतिक परिस्थिति :-**

दि. २० अक्टूबर, १९९९ ई. को तेरहवी लोकसभा अस्तित्व में आई । इस चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी के रुप में भारतीय जनता पार्टी सामने आई । अन्य २३ राजनीतिक दलों का समर्थन प्राप्त करके मा. अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्त्व में केंद्र में उनकी सरकार सत्ता में आई । दि. ६ फरवरी, २००३ को मा. वाजपेयी जी के नेतृत्त्वमें सरकार ने अपनी बागड़ोर सँभाली। मा. वाजपेयी भारत के प्रधानमंत्री बने। '' कवियों में प्रधानमंत्री और प्रधानमंत्रियों में कवि '' इस कथन को सार्थक करने का कार्य मा. वाजपेयी जी ने किया । वे हिंदी के लोकप्रिय, बहुचर्चित कवियों में से एक है। अपने पाँच वर्ष के कार्यकाल में 'हिंदूत्व प्रचार-प्रसार का छूपा अजेंड़ा ' लेकर सत्ता में आई भारतीय जनता पार्टी सरकार को अपने समर्थनार्थ प्रत्येक राजनीतिक दल की माँग को पूरा करने के लिए काफी भागदौड़ करनी पडी ।

करीब पाँच वर्ष के कार्यकाल में वाजपेयी सरकार को 'कारगील युद्ध, ''हवाई जहाज का अपहरण'' (हाईजैक) 'पाकिस्तान में परवेझ मुशर्रफ का मिलिट्री राज', 'सी.टी.बी.टी.' , 'आर्थिक मंदी'., 'सुरक्षा समस्या', 'तहलका मामला', 'आर्थिक भ्रष्टाचार' , 'संसद पर आतंकवादियों का हमला', '११ वी सार्क परिषद', 'भारत पाकिस्तान के बीच तणावपूर्ण संबंध ', 'अयोध्या प्रश्न' , 'गोध्रा हत्याकांड' , 'गुजरात में हुए जातीय दंगे'। आदि प्रश्नों के कारण केंद्र सरकार अस्थिरता पूर्ण वातावरण में रही। इस वर्ष भारतीय राजनीति के क्षेत्र में जो प्रमुख घटनाएँ, प्रसंग घटित हो चुके हैं, वे निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

१.१ ऑपरेशन सर्प विनाश

जम्मू काश्मीर के पूंछ राजौरी जिले के सूरन कोट के करीब हिलकला पर्वत पर आतंकवादी हमला करने की योजना बना रहे थे । जिसका पता भारत के सीमा सुरक्षा बल को चला वहाँ पर छापा मारने पर महत्त्वपूर्ण दस्तावेज प्राप्त हुए। जिससे पता चला कि, वहाँ पर आतंकवादी मुंबई, दिल्ली के प्रमुख प्रशासनिक कार्यालयों पर हमला बनाने की योजना बना रहे थे। तब ऑपरेशन ''सर्प विनाश" की योजना बनाई गई। इसका प्रारंभ दि. २१ अप्रैल, २००३ को हुआ। इसमें करीब २०० आतंकवादियों को मार दिया गया। 'लष्कर-ए-तोयबा' जैस-ए- महम्मद, 'जामियात-उल-मुजाहिदीन ' इन आतंकवादी संघठनों के यह आतंकवादी थे। इस प्रकार 'सर्प विनाश ' योजना सफल हुई।

१.२ **मा. सुप्रीम न्यायालय ने चुनाव संबंधी कुछ निर्देश जारी किए।**

संसदीय प्रणाली में चुनाव महत्त्वपूर्ण होते हैं। विधानसभा, लोकसभा, तथा स्थानीय निकायों के लिए पाँच वर्ष में चुनाव अनिवार्यता से करने का सांविधानिक प्रावधान हैं। स्वाधीनता के पश्चात् चुनाव में 'धन ' का प्रयोग काफी पैमाने पर होने लगा। भ्रष्ट, गुंड़ागर्दी करनेवाले लोग धन का लालच दिखाकर वोट खरीद कर चुनाव जीतने लगे। राजनीति में बढ़ता भ्रष्टाचार तथा काले धंदे पर रोक लगाने के लिए मा. सर्वोच्च न्यायालय ने दि. १३ मई, २००३ को एक आदेश जारी किया। जिसके अन्तर्गत चुनाव में खड़े रहनेवाली व्यक्ति को अपना पूर्व इतिहास और अपनी जायदाद, अपनी शैक्षिक अर्हता को हलफनामा के द्वारा जाहिर करनी होगी।

मा. सर्वाच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा था कि, प्रत्येक मतदाता को अपने नेता के बारे में संपूर्ण जानकारी मालूम होनी चाहिए। जिसको नागरिक वोट देनेवाले हैं, उस उम्मीदवार के पूर्व इतिहास से वह भलीभाँति ज्ञात हो। गुनाहगार व्यक्ति चुनाव के लिए योग्य नहीं माना जाएगा। जिससे अच्छे चरित्र, उच्च शिक्षा और सही अर्थों में जनता की सेवा करने वाले जनता जनार्दन ही सिर्फ राजनीति में भाग लेंगे। इसलिए मा. सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्देश सूचित किया था। जिसके अच्छे असर राजनीति में दिखाई देने लगे हैं।

१.३ **''बागलीहार परियोजना'' पर भारत-पाक के बीच चर्चा -**

पाकिस्तान भारत का पड़ोसी देश है। भारत-पाकिस्तान दरम्यान जम्मू-काश्मीर में चिनाब नदीपर ४५० मेगावैट की ''बागलीहार परियोजना'' के बारे में चर्चा करने के लिए नई दिल्ली में दो देशों के प्रतिनिधियों की बैठक दि. २८ मई,

से ३० मई, २००३ तक आयोजित की गई थी। सन, १९६० में प्रारंभ की गई ''बागलीहार परियोजना'' अब तक कार्यान्वित नहीं हो पाई है। प्रस्तुत बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व ए.डी. भारद्वाज ने तो पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व जामैं अली खान ने किया था। विश्व बैंक ने प्रस्तुत परियोजना के लिए अर्थसहाय्य किया है। किसी भी ठोस समझौते के बगैर प्रस्तुत परियोजना की चर्चा अधूरी रही।

१.४ **'दिल्ली – लाहौर' बस सेवा से भारत–पाक के लोगों में भाईचारा बढ़ा :–**

भारत के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी बाजपेयी ने 'दिल्ली - लाहौर' के बीच सीधी समझौता एक्सप्रेस बस सेवा प्रारंभ करने की घोषणा की थी। १८ महीने के अंतराल के बाद दि. ११ जुलाई, २००३ को 'दिल्ली - लाहौर' बस सेवा शुरु की गईक । प्रस्तुत बस से पाकिस्तान का नूर परिवार भारत आ रहा था। उनकी छोटी बेटी के हृदय का ऑपरेशन बेंगलोर के अस्पताल में करना था। इस प्रकार प्रस्तुत बस सेवा से दोनों देशोंके लोगों में आपसी संबंध मजबूत हो गए।

भारत पाकिस्तान के दरम्यान बदलते संबंधों को लेकर प्रसिध्द समाज चिंतक एवं राजनीतिज्ञ जे.एन. दीक्षित ने लिखा है , ''पाकिस्तान के संबंध का नया अध्याय, बड़े सत्ताधारियों के संबंध रखना। इराक का युद्ध और अफगानिस्तान में की शांति प्रस्थापित करने के प्रयास में सहभाग लेने की भूमिका तय करना।'' दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं ।

१.५ **मा. सुप्रीम न्यायालय ने मा.सुश्री. मायावती के विरोध में एफ.आय.आर. दाखिल करने का आदेश दिया :–**

राजनीति में मुख्यमंत्री जैसे लोग भ्रष्टाचार करते हैं। जो राजनीति के लिए

लाछंन है। दि. १८ सितंबर, २००३ के दिन मा. सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश की भूतपूर्व मुख्यमंत्री मा. सुश्री. मायावती और भूतपूर्व पर्यावरण मंत्री नजीमुद्दीन सिद्दकी को १७५ करोड़ रुपये के ताज कॉरिडार भ्रष्टाचार मामले में सी.बी.आय. को एफ.आय.आर. दाखिल करने का आदेश दिया। ताज कॉरिडॉर मामले में थे दोनों दोषी पाए गए थे।

ताज कॉरीड़ॉर मामले में ताजमहल, आग्रा फोर्ट, रामबाग, इदमद-उद-दूल्हा और चीनी का रोजा आदि स्थानों पर नदी, पर्यावरण को हानि पहुँचाकर इन मंत्रियों ने १७५ करोड़ रुपयों का घोटाला किया था।

१.६ <u>शांति प्रक्रिया में आतंकवादी गतिविधियाँ बाधा बनी :-</u>

पाकिस्तान की ओर से समर्थित आतंकवाद से भारत हमेशा त्रस्त रहा है। भारत-पाकिस्तान के दरम्यान शांति प्रक्रिया जारी होते हुए २००३, सितंबर में जम्मू-काश्मीर में दो स्थानों पर शक्तिशाली बम विस्फोट हुए । उसमें ३८ लोग घायल हुए और ०७ लोगों की मृत्यु हुई। वैष्णवी देवी के दर्शन के लिए जाते समय यह बम विस्फोट हुए। जिससे यात्रियों में घबराहट निर्माण हुई।

१.७ <u>मा. एरीयल शेरॉन की भारत यात्रा :-</u>

२००३ , सितंबर महीने के दूसरे सप्ताह में इस्त्रायल के प्रधानमंत्री मा. एरीयल शेरॉन भारत के दौरे पर आए, किसी इस्त्रायली प्रधानमंत्री की यह भारत के लिए यह प्रथम भेट थी। प्रस्तुत यात्रा की ओर पूरे विश्व का ध्यान लगा रहा । इसी दरम्यान भारत -इस्त्रायल दोनों देशों के बीच विविध विषयों पर चर्चा हो गई थी। जिससे दोनों देशों के बीच अच्छे संबंध बने।

१.८ **भारत-पाकिस्तान की जनता के बीच परस्पर संपर्क रखने का भारत का प्रस्ताव :-**

भारत-पाकिस्तान के साथ हमेशा मैत्री और शांति की दृष्टि से कदम उठाता आ रहा है। दिसंबर, २००३ में भारत के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने पाकिस्तान सरकार के सामने प्रस्ताव रखा कि, दोनों देशों की जनता में परस्पर आदान-प्रदान, तथा सहयोग की भावना का विकास होना चाहिए। जिससे दोनों देशों के बीच बिगड़ते हुए संबंधों में सुधार आ जाए। श्रीनगर, मुझफर्राबाद, मुंबई, कराची में क्रिकेट तथा अन्य खेलों की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए। इस दृष्टि से प्रस्तुत प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण रहा। जिससे दोनों देशों के बीच सहयोगपूर्ण वातावरण रहा।

१.९ **संसद पर हमला करनेवालें तीन लोगों को मौत की सजा**

संसद भारतीय लोकतंत्र का पावन मंदिर है। मोहंम्मद अफजल, शौकत हुसेनगुरु और दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिव्याख्याता अब्दुल रहमान गिलानी ने संसद पर हमला किया। प्रस्तुत घटना लोकतंत्र के विरुद्ध हीनता का षड़यंत्र मानी गई। इसमें कुछ लोक मारे गए थे। एक विशेष अदालत ने इन तीन लोगों को संसद पर हमला करने के आरोप में मौत की सजा सुनाई ।

विश्व स्तर की राजनीतिक घटनाओं को भी निम्नलिखित रुप में प्रस्तुत किया जा रहा है। जो वर्ष, २००३ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है।

१.१० **श्रीलंका में आपात्काल जारी :**

श्रीलंका की राष्ट्रपति मा. चंद्रिका कुमारतुंगा ने कुछ दिनों के लिए दि. ५ नवबंर २००३ के दिन अपने देश में आपात्काल घोषित किया । श्रीलंका में 'लिट्टे' अर्थात् 'लिबरेशन टायगर ऑव तमील इलम' की बढ़ती हुई आतंकवादी गतिविधियों

पर लगाने के लिए मा. राष्ट्रपति कुमारतुंगा ने आपात्काल की घोषणा की थी।

१.११ भारत– श्रीलंका के बीच आर्थिक निवेश पर चर्चा :

श्रीलंक भारत का पडोसी देश है। भारत के साथ श्रीलंका के संबंध मित्रता के रहे हैं। दि. २० अक्टूबर, २००३ के दिन भारत के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी बाजपेयी और श्रीलंका के प्रधानमंत्री मा. रानिल विक्रम सिंधे के बीच भारत - श्रीलंका के आर्थिक सहयोग पर चर्चा हुई। भारत श्रीलंका में निवेश करनेवाला तीसरे क्रमांक का देश रहा हैं।

१.१२ विश्व संसदीय सम्मेलन :

वर्ष, २००३ भारतीय संसद की दृष्टि से की महत्त्वपूर्ण वर्ष रहा है। क्योंकि इसी वर्ष भारतीय संसद का 'सुवर्ण महोत्सव' मनाया गया। इसी उपलक्ष्य में श्रीलंका, मालदीव, नेपाल, भूतान, बांगलादेश, चीन के संसदीय संबंधी पदाधिकारियों को भारत में आमंत्रित किया था। उपर विवेचित देशों के प्रतिनिधियों ने आतंकवाद की समस्या को सुलझाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार विनिमय करने का आवाहन किया। दि. २२ नवरी, २००३ में महामहिम मा. राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कमाल के कर कमलों द्वारा इस संम्मेलन का उद्घाटन किया गया।

१.१३ अंतर्राष्ट्रीय अपराधिक अदालत :

नेदरलँडस स्थित हेग में 'इंटरनॅशनल क्रिमिनल कोर्ट' की स्थापना की गई। इसमें अंतर्राष्ट्रीय युद्ध, अंतर्राष्ट्रीय अपराध, मानव की हत्याएँ, वांशिंक भेद, इसपर के अन्तर्राष्ट्रीय अपराधों पर कानूनी प्रक्रिया अदालत में प्रस्तुत होनेवाली है। दि.

११, मार्च २००३ से इस कोर्ट का कामकाज शुरु हुआ।

१.१४ **'इराक–अमेरिका' युद्ध में भारत की भूमिका :**

भारत के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने दि. १२ मार्च, २००३ को लोकसभा में बयान दिया कि, भारत की भूमिका इराक युद्ध के विरोधी है। इसलिए इस युद्ध में शामिल होने का सवाल ही नहीं है। इराक के विरोध में अमेरिका ने युद्ध छेड़ने की भूमिका को लेकर भारत ने अमेरिका की आलोचना की। ऐसी ही आलोचना फ्रान्स, जर्मनी, रुस , चीन आदि देशों ने भी की थी।

भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री ने लोकसभा में प्रतिपादन किया था कि, आखाती देशों में काम करनेवाले लोगोंपर इस युद्धका कोई भी असर नहीं होगा।

इराक युद्ध के बारे में 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका के संपादक प्रभाकर श्रोत्रिय लिखते हैं - ''भूमंड़ल के विश्वबाजार और आकाशगामी सूचना प्रौद्योगिकी पर उसका एकछत्र अधिकार है। हाल ही में उसने अफगानियों के बाद इराकियों के शव के अम्बारों पर सिंहासन सजाया हैं। वह निश्चय ही एक प्रचंड मिथक-पुरुष है, जिससे संसार भयाक्रांत है। २ '' इस प्रकार इस युद्ध की विभीषिका को प्रस्तुत किया है।

१.१५ **भारत को धमकाने के लिए पाकिस्तान आतंकवाद का साथ दे रहा हैं – मा. वाजपेयी**

जम्मू-काश्मीर में आतंकवाद पाकिस्तान के सहयोग से ही चलता आ रहा है, ऐसा भारत के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा। यह बात दि. २५ सितंबर, २००३ को न्यूयार्क में मा. प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कही। मा. प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा था कि, सब आतंकवादी केंद्र इस्लामबाद (पाकिस्तान) में ही हैं। जो मा. मुशर्रफ के सहयोग से चलते हैं। विश्व

आतंकवाद का सामना कर रहा हैं जिसमें बेकसूर लोग मारे जा रहे है। इसलिए विश्व को आतंकवाद का सामना डटकर करना चाहिए। ऐसा भारत के मा. प्रधानमंत्री का कथन था।

१.१६ अफगानिस्तान युद्ध मे ब्रिटन का सहभाग : ब्रिटन की जनता का विरोध :-

अफगानिस्तान में तालिबान का उन्मूलन करने के लिए अमेरिका का साथ ब्रिटन ने दिया। ब्रिटन के प्रधानमंत्री मा, टोनी ब्लेअर ने अपने मंत्रीमंडल के सहयोगी तथा अपने देश की जनता को विश्वास में लेने के बजाय केवल स्वार्थ हेतु अमेरिका का साथ दिया। ब्रिटन की लेबर पार्टी ने संसद में प्रधानमंत्री मा. टोनी ब्लेअर के अफगानिस्तान युद्ध में सहभागी होने के निर्णय के विरोध में मतदान किया। फिर भी मा. टोनी ब्लेअर अपने फैसले पर अडिग रहे। मा. टोनी ब्लेअर ने देश की जनता का खूलकर विरोध सहकर उन्होंने अफगानिस्तान युद्ध में अमेरिका का साथ दिया।

२) सामाजिक परिस्थिति :-

वर्ष, २००३ २१ वी शताब्दी के प्रथम दशक का तीसरा वर्ष है। यह ''शताब्दी'' '' कम्प्युटर की शताब्दी'' होने के कारण समाज में, समाज के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर का बोलबाला रहा हैं। औद्योगिकरण की वजह से भारतीय समाज व्यवस्था में आमूल परिवर्तन आ चुका था। भारतीय समाज पर भारतीय राजनीती का काफी प्रभाव रहा है। जिससे भारतीय समाज व्यवस्था प्रभावित रही है। सामाजिक, परिस्थिति को देखकर, प्रसिद्ध चिंतक 'हंस' पत्रिका के संपादक 'राजेंद्र यादव' जी ने लिखा है, - ''हे आदरणीय चैनलियों, घूस

घोटालों, देशद्राह, गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, बलात्कार, हत्याओं या पुलिस राज की बातें बार-बार बताकर क्यों हमारे मुंह का जायका और मन की शांति खराब करते है आप ? करोड़ों,अरबों लगाकर हमें मंदिर बनाने दीजिए, धार्मिक समाराहों की भव्य यात्राओं से परलोक सुधारने दीजिए इत्मीनान से नए वर्ष में इस विराट मेगा फिल्म का मजा लेने दीजिए ..... हम अपने-अपने ड्राइंग रुमों में सोच-विचार को टी.वी. चैनलों के सुपुर्द कर इस महान शो का सुख भोग रहे हैं, पीछे हमारे चूल्हा चक्की, नीम , हल्दी या बड़े-छोटे उद्योग धंधों को मल्टीनेशनल चोर उठाये लिये जा रहे हैं तो अपनी बला से .... बैंकों, युनिट-ट्रस्टों या दूसरी खरीद-फरोख्त से चोरी करके कम से कम अपने नुकसान की भरपाई तो हम कर ही लेंगे ... है। ३ ''इस प्रकार तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति को लेकर चिंता व्यक्त की है।

वर्ष, २००३ में घटित सामाजिक परिस्थिति संबंधित महत्त्वपूर्ण घटना, प्रसंग निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

१.२.१ भारतीय वंश की कल्पना चावला – प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री

दि. १६ जनवरी, २००३ में 'कोलंबिया' अंतरिक्ष अभियान में कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में प्रवेश किंया। विविध बीमारी पर इलाज करने के लिए औषधियों की खोज करने के लिए प्रस्तुत अंतरिक्ष परियोजना आयोजन किया गया था। लेकिन, 'केनेडी स्पेस सेंटर' में आने के पूर्व ही 'कोलंबिया' की दुर्घटना हुई। दि. १ फरवरी, २००३ को कल्पना चावला की मृत्यु हो गई। चावला के साथ छह अंतरिक्ष साथियों की भी मृत्यु हो गई। इसलिए यह दिन अंतरिक्ष प्रेमियों के

लिए 'काला दिन' रहा। कल्पना चावला को प्रणाम करके 'पी एल एल व्ही सी-४' यह भारत के उपग्रह को 'कल्पना -१' यह नाम दिया गया। कल्पना चावला को अपनी मातृभूमि भारत के बारे में अभिमान रहा है। सन ,१९८४ में कोलरॅडो विश्वविद्यालय से कल्पना चावला जी ने 'डॉक्टरेट' की उपाधि प्राप्त की।

कल्पना चावला की मृत्यु पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते समय कल्पना चावला की तुलना लोकसभा अध्यक्ष मा. मनोहर जोशी जी ने ''झांसी की राणी''४ के साथ की है।

१.२.२ मानवी क्लोन का निर्माण :

विज्ञान के नए-नए अनुसंधान से मानव विकासोन्मुख रहा है। मानवी क्लोन शोध मानव के उत्थान की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। जनवरी २००३ में विश्व के वैज्ञानिकों ने मानवी क्लोन निर्माण करने का प्रयास किया। अंतर्राष्ट्रीय क्लोन वैज्ञानिक डॉक्टर ॲटिनोरी और अमेरिकन शास्त्रज्ञ पेनॉस झेव्हीस ने प्रस्तुत मानवी क्लोन में अपना शोध कार्य जारी रखा था। लेकिन, विरोधी वैज्ञानिकों ने मानवी क्लोन के निर्माण का दावा खारिज किया। कुछ शास्त्रज्ञों का कहना था कि, प्राणियों के बनाए हुए क्लोन से निर्मित प्राणिं अधिक समय तक जीवित नहीं रहे। विज्ञान की दृष्टि से'मानवी क्लोन' इस वर्ष की महत्त्वपूर्ण घटना कही जाती है।

१.२.३ भ्रष्टाचार बन गया शिष्टाचार

भारतीय समाज में भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है। फरवरी, २००३ में भ्रष्टाचार का एक मामला सामने आया। राजनीति और प्रशासन की मदद से अब्दुल करीम तेलगी ने 'जाली मुद्रांक घोटाला' किया। प्रस्तुत भ्रष्टाचार के मामले में मुंबई पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी तथा विविध राजनीतिक दलों के राजनेता भी शामिल थे। प्रस्तुत भ्रष्टाचार में करोड़ों रुपयों की हानि सरकार को उठानी पडी। भारतीय समाज में प्रस्तुत भ्रष्टाचार ने शिष्टाचार के रुप में प्रवेश किया था।

१.२.४ दिल्ली उपहार सिनेमागृह में लगी आग में मृतकों को हर्जाना प्राप्त हुआ।

दिल्ली के 'उपहार' सिनेमागृह में मृतकों को हरजाना प्राप्त हुआ। दिल्ली के 'उपहार' सिनेमागृह में लगी आग में (दि. १३ जून १९९७) ५९ लोगो की मृत्यु हुई और १०३ लोग घायल हो गए । करीब ६ साल के अन्तराल के बाद मा.दिल्ली हाईकोर्ट ने दि. २४ अप्रैल, २००३ को मृतकों के रिश्तेदारों को न्याय दिया। मृतक तथा घायल पीड़ितों को करीब १८ करोड़ रुपयों की राशि हरजाने के रुप में प्राप्त हुई ।

१.२.५ हवाई जहाज 'तेजस' का सफल प्रयोग

भारत में निर्माण किया गया प्रथम लड़ाऊ हवाई जहाज 'तेजस' का सफल प्रयोग दि. ४ मई, २००३ को किया गया । भारत को युद्ध नौका, क्षेपणास्त्र, उपग्रह और अग्निबाण के निर्माण में सफलता प्राप्त हो गई। विज्ञान के क्षेत्र में भारत की प्रस्तुत सफलता महत्त्वपूर्ण मानी गई है।

१.२.६ बर्निंग द ट्रेन :-

दि. १५ मई, २००३ का दिन भारतीय रेल के इतिहास में काला दिन रहा। इसी दिन मुंबई से अमृतसर जानेवाली फ्रन्टीयर मेल को लुधियाना स्टेशन के करीब अचानक आग लग गई। रात का समय था। अधिकांश रेल यात्री सो चुके थे। इस हादसे में करीब ३६ यात्रियों की मृत्यु हो गई। १०० से अधिक यात्री आहत हो गए। आग के कारण का पता नही चल पाया। इस हादसे में काफी पैमाने जीवित तथा वित्त हानि हो गई ।

१.२.७ **धूम्रपान का विरोध– विश्व स्वास्थ्य संघठन का निर्णय :–**

विश्व स्वास्थ्य संगठन संपूर्ण विश्व में मानव के स्वास्थ्य के हित में कार्यरत संघठन है। वह हमेशा मानव का स्वास्थ्य अच्छा रहे इस दृष्टि से प्रयत्नशील रहता है। दि. २१ मई, २००३ को विश्व स्वास्थ्य संघठन ने धूम्रपान पर पाबंदी लगाई। पूरे विश्व में '५ करोड़ लोग ' ५ धूम्रपान के कारण मृत्यु के शिकार हो जाते है। तंमाखु चबाना तथा सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जिससे शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता हैं। जिससे विभिन्न व्याधियाँ धूम्रपान करनेवाले व्यक्तियों को जूड जाती हैं।

विश्व स्वास्थ्य संघठन ने दूरदर्शन तथा समाचार पत्रों में प्रसारित - प्रकाशित धूम्रपान संबंधी विज्ञापनों पर भी पाबंदी लगाई हैं

१.२.८ **सिव्हियर ॲक्युट रिस्पिरेटरी सिण्ड्रोम अर्थात् (सार्स)**

नई शती में कुछ नयी बीमारियों का मानव को सामना करना पडा। उसमें एक है 'सार्स' नाम की बीमारी। 'सार्स ' का अर्थ है ' सिव्हियर ॲक्यूट रिस्पिरेटरी सिंड्रोम ' । यह बीमारी 'कोरोना' नामक विषाणू फैलाता है। वैज्ञानिक उसे

कोरो व्हायरल न्यूमोनिया (सी. व्ही.पी.) कहते है। 'सार्स' का संसर्ग तथा उसका प्रभाव न होने के लिए सतर्कता प्राप्त करनी चाहिए। 'सार्स' से बचने के लिए अपने जूते घर में ठीक तरह से रखने चाहिए। घर में वस्तुओं को विविध साधनों के द्वारा अल्कोहोल, फिनाईल, डॉमेक्स तथा डेटॉल से साफ रखना चाहिए। बार, परमिट रुम, क्लब्स, हॉटेल आदि जगहों पर जाना उचित नहीं है। जिससे दूर रहने पर 'सार्स' बीमारी नहीं होगी।

प्रस्तुत बीमारी का पूरे विश्व पर काफी गहरा असर पडा। 'सार्स' प्रभाव के दौरान लंबी दूरी की हवाई यात्राओं पर पाबंदी लगाई गयी।

१.२.९ <u>महिला आरक्षण विधेयक :-</u>

भारत की राजनीति में पुरुषों की तुलना में महिलाओं का अनुपात कम रहा। इसमें समानता लाने की दृष्टि से 'महिला आरक्षण विधेयक' की माँग की गई। लोकसभा, राज्यसभा में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में कम रही है। भारत की राजनीति में महिलाओं के सहभाग लेने का अनुपात ८.८ प्रतिशत रहा है। 'महिला आरक्षण विधेयक ' कई बार लोकसभा में पेश किया गया। लेकिन विविध राजनीतिक दलों ने कोई न कोई कारण दिखाकर प्रस्तुत विधेयक का विरोध किया।

महिलाओं के ३३ प्रतिशत आरक्षण विधेयक पर सहमति बनाने के लिए जून, २००३ में लोकसभा के अध्यक्ष मा. मनोहर जोशी जी की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई थी। उसमें सब राजनीतिक दलों के नेतागण उपस्थित थे। तीन घंटे प्रस्तुत विषय पर चर्चा हुई। लेकिन उसपर कोई अंतिम निर्णय नहीं हुआ।

१.२.१० वृद्ध तथा गरीब लोगों के लिए नई 'बीमा योजना' :-

सरकार की यह जिम्मेदारी होती है कि, वृद्ध तथा गरीब लोगों की ओर विशेष ध्यान दे। औद्योगिकरण तथा महानगरीकरण के कारण संयुक्त परिवार पद्धति का अस्तित्व मिट रहा है। इसी वजह से वृद्ध लोगों की समस्या विकराल रुप धारण कर रही हैं। भावनिक तथा आर्थिक से सहायता प्रदान करने के लिए दि. १४ जुलाई, २००३ को मा. वाजपेयी सरकार ने ''नई'' 'बीमा योजना' की घोषणा की। जिसमें यह प्रावधान था कि, जिस व्यक्ति की आयु ५५ वर्ष से अधिक है वह प्रस्तुत 'बीमा योजना' का लाभ उठा सकता हैं। बीमा धारक व्यक्ति को न्यूनतम २५०/- रु. तो अधिक से अधिक २००० रु. पेन्शन मिल सकती है। वृद्ध तथा गरीब लोगों के लिए प्रस्तुत 'बीमा योजना' महत्त्व की रही हैं।

१.२.११ एच.आय.व्ही. एड्स की रोकथाम के प्रयास :-

अलग-अलग राजनीतिक दलों में हमेशा विवाद होते हैं, उनमें किसी भी विषय पर एकमत का अभाव दिखाई देता हैं। लेकिन दि. २६ जुलाई २००३ को प्रस्तुत कथन गलत साबित हुआ। भारत के सभी राजनीतिक दल परस्परों में जो एकमत का अभाव दिखाई देता है। लेकिन उसे भूलकर सब राजनीतिक दल एच.आय.व्ही. एड्स की रोकधाम के लिए एक ही मंच पर आए। प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी, विपक्ष नेता मा. सोनिया गांधी ने एच.आय.व्ही. एड्स के उन्मूलन के लिए अपने-अपने विचार रखे।

प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था - कि ''शिक्षा तथा जागरण से युवाओं में एड्स के बारे में जन जागृति होगी। एड्स की रोकधाम के लिए युवाओं ने सतर्कता बरतने की आवश्यकता है।''६ विपक्ष नेता मा. सोनिया गांधी का

कहना था AIDS (एड्स) के बारे में जनजागृति करने के लिए हाईस्कूल के छात्र-छात्राओं को लैगिक शिक्षा दी जाए। भारतीय समाज एच.आय.व्ही. एड्स मुक्त हो जाए इस दृष्टि से सरकार प्रस्तुत कदम उठा रही है।

१.२.१२ मुंबई में दो बम धमाके में ५२ लोगों की मृत्यु

मुंबई देश की आर्थिक राजधानी है। देश विरोधी कुछ तत्त्व मुंबई में अशांति फैलाने की दृष्टि से कार्यरत रहते हैं। दि. २५ अगस्त, २००३ को मुंबई में बम धमाके हुए। जिसमें करीब ५२ लोगों की मृत्यु हो गई। सन १९९३ के बाद मुंबई में यह शक्तिशाली बम विस्फोट था। झवेरी बाजार और गेट वे ऑफ इंडिया पर दो बम विस्फोट हो चुके थे। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री मा. सुशीलकुमार शिंदे, उप प्रधानमंत्री मा. लालकृष्ण अडवाणी, विपक्ष नेता मा. सोनिया गांधी ने घटना स्थल का दौरा किया और प्रस्तुत विस्फोट की निंदा की।

१.२.१३ रिर्सोसएट का सफल परीक्षण :-

भारत ने विज्ञान के क्षेत्र में अतुलनीय उन्नति की है। दि. १७ सितंबर, २००३ के दिन श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर से पी.एस.एल. सी.एस. की सहायता से रिर्सोसएट उपग्रह को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया। इस परियोजना के लिए ८० करोड रुपये लागत आई। प्रस्तुत उपग्रह के द्वारा कृषि, भूमि तथा जल स्त्रोत संबंधी अधुनातन जानकारी प्राप्त होगी।

प्रस्तुत परीक्षण के लिए भारत के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयीजी ने जी. माधवन नायर और उनके सहयोगियों का अभिनंदन किया।

१.२.१४ सरकारी कर्मचारियों को हडताल का अधिकार नहीं – मा. सुप्रीम न्यायालय :

सरकारी कर्मचारी अपनी विविध माँगों के लिए अपने-अपने संघठनों के द्वारा हडताल करते है , और अपनी माँगों की पूर्ति करते है। वर्ष २००३ में तामिलनाडू में करीब १.७० लाख राज्य सरकारी कर्मचारिंयोंने बहुत बड़ी हडताल की थी। यह विवाद मा. सर्वोच्च न्यायालय में दि. २४ सितंबर , २००३ को दाखिल हुआ। मा. सर्वोच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा था कि राज्य सरकारी कर्मचारियों को हडताल पर जाने का संविधानिक अधिकार नहीं हैं ।

इस प्रकार वर्ष,. २००३ में सामाजिक परिस्थिति रही है।

३) आर्थिक परिस्थिती :-

'अर्थ' मानव जीवन की महत्त्वपूर्ण इकाई है। 'गॅट' करार, W.T.O. आदि आर्थिक परिवर्तनों की सहायता से भारत के आर्थिक क्षेत्र में काफी परिवर्तन हुआ। वर्ष, २००३ में भारत सरकार ने आर्थिक क्षेत्र में नए-नए प्रयोग किए । जिसका असर आम आदमी पर पडा। ग्रामीण भारत की अर्थ व्यवस्था प्रभावित हुई। कृषि क्षेत्र भी भूमंड़लीकरण की चपेट में आ गया । वर्ष, २००३ में आर्थिक क्षेत्र से संबंधित प्रमुख घटना, प्रसंग परियोजनाओं का निर्माण आदि बातें घटित हुई। उनका भारत के जनमानस पर जो प्रभाव पडा, वह महनीय रहा है।

वर्ष, २००३ की आर्थिक परिस्थिति पर प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. वसंत पटवर्धन ने लिखा है, ''अर्थ उद्योग के लिए स्वाधीनता के पश्चात वर्ष, २००३ महत्त्वपूर्ण रहा है। इस वर्ष अनाज का उत्पाद बडी मात्रा में बढ़ गया। विदेशी मुद्रा अधिक मात्रा में बढ़ गई । बड़ी-बड़ी कंपनियों ने काफी लाभ कमाया।'' इस प्रकार इस वर्ष की आर्थिक परिस्थिति रही है। जिसपर कुछ अर्थशास्त्रियों ने संतोष जाहिर किया था। २००३ वर्ष की अर्थ क्षेत्र सें संबंधित घटना निम्नलिखित प्रकार से है।

१.३.१ वर्ष, २००३ का केंद्रीय बजट :-

स्वतंत्रता के पश्चात् भा.ज.पा. की सरकार पहली बार गैर काँग्रेसी सरकार सत्ता में आई थी। केंद्रीय अर्थमंत्री मा. जसवंतसिंह ने दि. २८, फरवरी, २००३ को अपना बजट संसद में पेश किया। प्रस्तुत बजट में बुनियादी क्षेत्र के लिए, आम आदमी के लिए, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क आदि के लिए काफी छूट दी। प्रस्तुत बजट में ४, ३८, ७९५ करोड रु. खर्च का प्रावधान रहा।

१.३.२ मूल्य पर आधारित टॅक्स पद्धति अर्थात् 'व्हॅट' :-

सरकार जनता पर नए-नए कर लगाकर देश विकास के लिए राजस्व जुटाती है। सरकार का हमेशा यह प्रयास रहता है कि अपने राजस्व में अधिक से अधिक वृद्धि हो जिससे विभिन्न प्रकार की परियोजनाएँ सुचारु रुप से चलाई जाए। इस वर्ष सरकार ने 'V.A.T.' अर्थात् 'Value Aded Tax' लागू करने का फैसला किया। दि. १ अप्रैल २००३ से 'व्हॅट' भारत में जारी किया गया। विश्व के करीब १४० देशोंने 'व्हॅट' को स्वीकृति दे दी।

१.३.३ निजीकरण की नीति का विरोध :-

केंद्र सरकार की निजीकरण नीति के विरोध में दि. २१ मई, २००३ में देशव्यापी 'ओद्योगिक बंद' का आवाहन किया था। प्रस्तुत बंद का मिला-जूला असर रहा। नई औद्योगिक नीति स्वीकार करने से मजदूरों में कटौती करनी पडी। जिससे मजदूरों का जीवन उद्धवस्त हो गया। जिसके विरोध में देशव्यापी औद्योगिक बंद किया गया।

१.३.४ भारत आर्थिक महासत्ता के रुप में ख्याति प्राप्त करेगा :-

भारत ने सभी क्षेत्रों में काफी विकास किया हैं। ''चीन के पश्चात् भारत विश्व में आर्थिक महासत्ता के रुप में होगा। ऐसा मत ''टाइम्स ऑफ लंडन'' ने व्यक्त किया है। भारत का आर्थिक विकास तीव्र गति के साथ हो रहा है। भारत में उच्च शिक्षित तथा युवाओं की संख्या अधिक हैं। विकसित देशोंको भारत की ओर से मजदूर प्राप्त होंगे। भारतवासियों को विदेशों में नौकरियाँ प्राप्त होगी। जिसकी वजह से भारत को विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी, यही बात भारत को आर्थिक महासत्ता बनाने के लिए उपयोगी है।

१.३.५ विश्व व्यापार संघठन की कॅनकून परिषद, २००३:-

विश्व व्यापार संघठन की तीसरी द्‌वैवार्षिक मंत्रीस्तरीय परिषद दि. १० से दि. १४, सितंबर के दौरान मेक्सिको के कॉनकून शहर में आयोजित की गई। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के विकास के लिए प्रस्तुत परिषद का आयोजन किया गया। प्रस्तुत परिषद में विविध विषयों पर चर्चा की गयी। जिसमें विश्व कृषि ,व्यापार का करार, (ॲग्रीमेंट ऑन ॲग्रिकल्चर।और बहुराष्ट्रीय करार (मल्टिलॅटरल ॲग्रीमेंट ऑन इनव्हेस्टमेंटस्) ये दो विषय प्रमुख थे ।

१.३.६ आर्थिक दृष्टिसे पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण :-

भारत में सरकारी नौकरियों में जाति के आधार पर आरक्षण का प्रावधान हैं। इसी आधार पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों के लोगों को नौकरियों में आरक्षण दिया जाता हैं। लेकिन दि. १ अक्टूबर, २००३ को केंद्रीय मंत्रीमंडल ने संविधान में संशोधन करके सरकारी नौकरियों में आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के लोगों को भी सरकारी नौकरियों में आरक्षण की घोषणा की । सामाजिक समानता की दृष्टि से सरकार का यह प्रस्तुत निर्णय अत्यंत महत्त्व का रहा है।

१.३.७ नई सेवा निवृत्ति वेतन योजना :-

सरकारी कर्मचारी नौकरी से सेवा निवृत्त हो जाने पर उसे सरकार की ओर से सेवा निवृत्ति वेतन अर्थात् 'पेन्शन' दी जाती है। जिससे सरकारी तिजोरी पर अधिक बोझ पडता है। इसलिए केंद्र सरकार ने दि. २३ अक्टूबर, २००३ को ''नई सेवा निवृत्ति वेतन योजना'' जारी की जिसमें अक्टूबर, २००३ के बाद केंद्र, राज्य सरकार के सभी क्षेत्रों में भर्ती होनेवाले कर्मचारियों को 'नई सेवा निवृत्ति वेतन योजना' लागू की जाएगी। जिसमें सरकारी कर्मचारियों के वेतन से १० प्रतिशत राशि नई सेवा निवृत्ति वेतन योजना जमा की जाएगी और वह राशि शेअर मार्केट में लगाई

जाएगी। कर्मचारी सेवा निवृत्त हो जानेपर उसे शेअर मार्केट से प्राप्त राशि में से सेवा निवृत्ति वेतन दिया जाएगा।

वर्ष, २००३ की आर्थिक परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए उद्धव भडसाळकर ने लिखा है, - ''बहुराष्ट्रीय कंपनी का दमन, औद्योगिक की मंदी केंद्र सरकार द्वारा स्वीकार किया । निजीकरण से रोजगार की सुविधा में वृद्धि के अलावा न्यूनता आ गई हैं। इसलिए मजदूर निराश हो गए है। संघटित मजदूरों की तरह असंघटितों की परिस्थिति बहुत की दयनीय हो गई हैं ''९ जिससे अर्थशास्त्री, चिंतित दिखाई देते हैं।

१.३.८ भारतीय सहकार आंदोलन शताब्दी वर्ष - २००३ :-

'सहकार' के आधारपर मानव ने अपना विकास किया है। 'विना सहकार नहीं उद्धार ' इस संत वचन से सहकार का महत्त्व स्पष्ट होता है। ''समान हित संबंध की स्थापना करने हेतु एकत्रित आए व्यक्ति समूह सहकार' कहा जाता है। १० '' विशिष्ट व्यक्ति समूह से स्वयं की उन्नति प्राप्त करने हेतु समान हितसंबंध समान व्यक्तिगत विकास का अवसर और सहकार्य के तत्त्वों पर सहकार की मंझिल खड़ी हैं। सहकार क्षेत्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी हैं। भारत में सहकार आंदोलन के कारण ही कृषि, दूध, चीनी, कपडा उद्योग, चमड़ा उद्योग आदि सहकार क्षेत्रों का विगत १०० वर्ष में काफी विकास हुआ। सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी सहकार में स्वामी होता है। दि. १४ नवंबर, २००३ को पूरे भारत में सहकार आंदोलन की शताब्दी हर्ष उल्हास के साथ मनाई गई। इसी उपलक्ष्य देश में ''सहकार'' इस विषय को लेकर विविध स्थानों पर चर्चासत्रों, संगोष्ठियों का आायोजन किया गया था।

१.३.९ भूमि परियोजना :-

भारत में ६५ से ७० प्रतिशत लोग कृषि पर आधारित है। कृषि के लिए अच्छी भूमि और पानी की आवश्यकता है। कृषि ऋण के लिए महत्त्वपूर्ण कागजात् अनपढ़

किसानों को जल्दी मिलने चाहिए इसलिए 'भूमि' परियोजना को आवश्यक माना गया।

कर्नाटक में प्रस्तुत परियोजना आवश्यक मानी गई। हरियाना, राजस्थान, आंध्रप्रदेश, तामिलनाडू, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र आदि राज्यों में प्रस्तुत परियोजना लागू की गई। किसानों को कृषि ऋण प्राप्त करने के लिए आवश्यक कागज पत्रों को महत्त्वपूर्ण माना गया हैं। कम से कम कागजातों के द्वारा किसानों को ऋण सहजता के साथ प्राप्त हो ऐसा प्रावधान प्रस्तुत परियोजना है। यही प्रमुख उद्देश माना गया है।

१.३.१० सिक्कीम बिजली परियोजना :-

सरकार नइ-नई परियोजनाओं का प्रारंभ करके समाज, राष्ट्र को संपन्न, समृद्ध बनाती है। २००३ में प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी ने '''सिक्कीम बिजली परियोजना' का उद्घाटन किया। प्रस्तुत बिजली परियोजना से ५१० मेगावॅट बिजली का निर्माण होगा। ११ वी परियोजना के अंतर्गत देश के प्रत्येक नागरिक को सस्ते में बिजली की पूर्ति होगी। प्रस्तुत परियोजना प्रदूषण मुक्त होगी। प्रस्तुत परियोजना का लाभ पड़ोसी राज्यों को होगा जिससे कृषि, औद्योगिकरण कें विकास में वृद्धि होगी।

१.३.११ औद्योगिक क्षेत्र के कर्मचारियोंको सेवा निवृत्ति वेतन योजना :-

औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारियों को सेवा निवृत्ति वेतन नहीं दिया जाता थो। लेकिन सरकार ने दिसंबर, २००३ में औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत टाटा मोटर्स, बजाज ऑटो, एस.के. एफ., मारुति उद्योग लिमिटेड आदि औद्योगिक क्षेत्र की बड़ी-बड़ी कंपनियों में कार्यरत कर्मचारियों को सेवा निवृत्ति वेतन लागू किया। जिससे इस क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों में खुशी का वातावरण रहा।

१.३.१२ मुक्त व्यापार :-

World Trade Organisation के कारण विश्व में मुक्त व्यापार का सूत्रपात हुआ। मुक्त व्यापार की संकल्पना के लिए W.T.O. में अनेक प्रावधान जोड दिए हैं। यह प्रावधान दो प्रकार के है। एक 'टॅक्स' के बारे में हैं। दूसरा 'बिगर टॅक्स' के बारे मे है। अन्य भारतीय उद्योगों पर विदेशी उद्योगोंका प्रभाव बढ़ गया। विदेशी कंपनियों ने नए-नए तंत्र विकसित किए जिससे उत्पादन में वृद्धि हो गई, और मजदूर बेकार बन गए। यह मुक्त व्यापार व्यवस्था का बहुत बड़ा दोष कहा जा सकता है।

१.३.१३ कृषि क्षेत्र की दयनीय स्थिति :-

भारतीय अर्थ व्यवस्था का मूल आधार कृषि है। भारत में परंपरागत रुप से खेती व्यवसाय किया जाता है। भारत की खेती वर्षा पर आधारित है। जिससे भारतीय किसानों को हमेशा कृषि विषयक विभिन्न समस्याओं का सामना करना पडता हैं। भारत का किसान वर्ग ऋण की खाई में डूबता चला जा रहा है। W.T.O.और 'डंकेल' प्रस्ताव के कारण विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन भारत के कृषि क्षेत्र में भी हुआ। जिससे परंपरागत कृषि व्यवसाय करनेवाले किसान वर्ग की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई ।

१.३.१४ नदी जोड़ परियोजना अकाल पर एकमात्र उपाय : प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी :-

भारत में चेरापूंजी जैसे स्थान पर सर्वाधिक वर्षा रिकॉर्ड की जाती है, तो राजस्थान के कुछ भागों में पीने के पानी की भी किल्लत हैं। भारत की कृषि व्यवस्था वर्षा पर आधारित हैं और भारतीय कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ है। अकाल की समस्या पर समाधान ढूँढने हेतु भारत सरकार ने 'नदी जोड़'

''परियोजना'' का निर्माण किया है।

प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अकाल पर प्रभावशाली परियोजना के रुप में ''नदी जोड़ परियोजना '' महत्त्वपूर्ण है ऐसा कहा। इस पर लोकसभा में चर्चा की गई। विपक्ष के साथ साथ अन्य राजनीतिक पार्टियों ने भी प्रधानमंत्री की प्रस्तुत घोषणा का स्वागत किया। विपक्ष नेता मा. सोनिया गांधीजी ने भी प्रस्तुत परियोजना के लिए केंद्र सरकार की ओर से करीब १ लाख करोड़ रुपयों की लागत आ जाएगी ऐसा कहा। प्रस्तुत परियोजना पूर्ण होने से भारत भूमि और भी सुजलाम् सुफलाम् होगी।

''नदी जोड़ परियोजना'' अध्ययन मंडल पर मंत्री मा. सुरेश प्रभु जी की अध्यक्ष के रुप में नियुक्ति की गई। जल संपदा विभाग के प्रमुख मा. सी.सी. पटेल, उपाध्यक्ष के रुप में मा. सी. बी. थत्ते समिति के सदस्य होंगे। यह समिति अगले दस वर्ष में ३० नदी जोड़ उपविभाग परियोजनाओं का अध्ययन करके उसकी रिपोर्ट केंद्र सरकार को प्रस्तुत करनेवाली है।

इस प्रकार २००३ की आर्थिक क्षेत्र की प्रमुख घटना, प्रसंग तथा परियोजना का विवेचन है।

४) **धार्मिक परिस्थिति :-**

प्रस्तावना :- वर्ष, २००३ के धार्मिक परिस्थिति पर विचार करते हुए इस वर्ष की राजनीतिक परिस्थिति के साथ इसे जोडा जा सकता है। केंद्र सरकार में मा. अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार सत्ता में आई थी। 'हिंदूत्व का अजेंडा,' 'अयोध्या में मंदिर बनाने का आश्वासन' देकर सत्ता में आई। सरकार हिंदू धर्म का नारा अपने कार्यकाल में बुलंद करती रही। इसीकारण मा. वाजपेयी सरकार के कार्यकाल में हिंदूत्ववादी संघठनों के लिए जोश, उत्साह के दिन रहें।

वर्ष, २००३ की धार्मिक परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए 'हंस' पत्रिका के संपादक राजेंद्र यादव ने लिखा है। ''वस्तुत: आज जहाँ सारी लड़ाई मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और विवेकवाद की पुनर्स्थापना के लिए हो वहाँ ये पुरानी धार्मिक आस्थांएँ, या खूबसूरत गरिमामय मगर अप्रासंगिक हो चुकी व्यवस्था की पुनर्स्थापनाएँ अतार्किक और फूहड लगती है। धर्म जिस तरह आत्म सम्मोहन में फँसाकर विवेक धंस करता है, उसका सबसे बीभत्स रुप धार्मिक नर-संहारों ओर सांप्रदायिकता दंगों में देखा जा सकता है। वहाँ एक पक्ष धर्म के लिए मरता है तो दूसरा धर्म के नाम पर मरता है। ये लडाइयाँ सिर्फ विधर्मी पर विजय हासिल करके ही शांत नहीं होती, ये खुद अपने समाज के भीतर भी चलती है। वहाँ रातोंरात ऐसे स्वयंसेवक या खुदाई खिदमतगार पैदा हो जाते हैं जो अपने अधर्मियों को ठंड़ा करते हैं, या क्रूरता से धार्मिक मर्यादाओं का पालन कराते हैं। ११'' इस प्रकार धार्मिक परिस्थिति रही है।

वर्ष, २००३ में धार्मिक परिप्रेक्ष्य में जो घटना, प्रसंग भारत तथा विश्वस्तर पर घटित हुए है। वे निम्नकिंत प्रकार से है।

१.४.१ भोजशाला मामला :-

मध्यप्रदेश के भोजशाला में दि. ८ अप्रैल, २००३ को भोजशाला की प्राचीन वास्तु हिंदू भाविकों के लिए ६ वर्ष के लंबे अंतराल के बाद खोल दी गई। दि. ११ अप्रैल, २००३ को भोजशाला की प्राचीन वास्तु में मुस्लिम भाविकों ने नमाज पढ़ी। दि. ६ फरवरी, २००३ को वसंत पंचमी के दिन मध्य प्रदेश सरकार ने हिंदूओं को भोजशाला में प्रवेश देने से इनकार किया। हिंदू-मुस्लिम भाविकों में ''भोजशाला मामला'' इन दिनों काफी विवादाग्रस्त रहा।

१.४.२ पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसार – ''बाबरी मस्जिद मामला''

दि. ६ दिसंबर, सन १९९२ को बाबरी मस्जिद की वास्तु गिराई गई। हिंदू-मुस्लिम संघठनों ने बाबरी विवाद ग्रस्त ढ़ांचे को लेकर यह मामला न्यायप्रविष्ठ हुआ। मा. उच्च न्यायालय लखनौ ने पुरातत्त्व वेत्ताओं को इस मामले को लेकर अपनी रिपोर्ट देने का आदेश दिया था। दि. २५ अगस्त, २००३ को पुरातत्त्व वेत्ताओं ने मा. उच्च न्यायालय, लखनौ को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिस में कहा गया था कि, अयोध्या में १० वी शती में भी बाबरी मस्जिद थी।

१.४.३ कुंभ मेले में दुर्घटना :–

नाशिक, महाराष्ट्र में कुंभ मेला दि. २७ अगस्त, २००३ को लगा था। गोदावरी नदी के तट पर लाखों की तादाद में भाविक स्नान करने के लिए इकट्ठा हो गए थे। रामकुंड़ की ओर जानेवाली सड़क तंग रही। वहाँ साधु लोग प्रथम स्नान करते हैं। उसमें से कुछ साधुओं ने चांदी के कुछ सिक्के भीड़ में उछाल दिए। लोगों में चांदी के सिक्के पाने के लिए धिचापिच हो गई और उस हादसे में करीब ३३लोगें की मृत्यु हो गई १०० से अधिक लोग जखमी हो गए।

१.४.४ मदर तेरेसा को 'संतपद' से सम्मानित किया गया :–

दि. १९, अक्टूबर, २००३ को व्हॅटीकन सिटी में पोप जॉन पॉल द्वितीय ने ५० करोड लोगों की उपस्थिति में मदर तेरेसा को 'संतपद' से सम्मानित किया। स्कॉपीज मॅकडोनिया की राजधानी से मदर तेरेसा भारत आई। कोलकात्ता में उन्होंने अपने कार्यकाल का श्रीगणेशा किया। वहाँ पर गरीब, अनाथ लोगों के जीवन में नई किरण देने का उन्होंने प्रयास किया। दीन-दलित शोषित- पीड़ित वर्ग के लोगों की सेवा करने में उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया। इसी उपलक्ष्य में उन्हें 'संतपद' से

सम्मानित किया ।

इस प्रकार इस वर्ष धार्मिक परिस्थिति रही है।

५) **साहित्यिक परिस्थिति :-**

प्रस्तावना :- भारत में प्राचीन काल से श्रेष्ठ, उत्तमोत्तम साहित्य - सृजन की एक गौरवशाली परंपरा दिखायी देती है। यह 'चैनलों का युग' है फिर भी आज भारत वर्ष में साहित्य, पाठक प्रेमियों की कमी नहीं आई। भारत में हिंदी के साथ साथ अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी उत्तमोत्तम साहित्य-सृजन होता हैं। भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में होनेवाले अनुवाद के आदान-प्रदान से भाषाएँ समृद्ध बनती जा रही है। वर्ष, २००३ में साहित्यिक क्षेत्र में घटित कुछ महत्त्वपूर्ण घटना तथा प्रसंग प्रकार से प्रस्तुत किए जा रहे है।

वर्ष, २००३ की साहित्यिक परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुऐ 'हंस' पत्रिका के संपादक राजेंद्र यादव ने लिखा है - ''हमेशा के चालू मुहावरे में जब हन कहते है कि साहित्य आज संकट में है तो इसका सीधा अर्थ है कि, उसकी स्वायंत्तता, वर्ण-वर्ग सीमित सार्वभौमिकता और पवित्र शुद्धता खतरे में पड गई है, क्योंकि मानवीय संवेदना का एकाधिकार छिनने या छीजते जाने की इबारतें दीवार पर मोटे-मोटे अक्षरों में दिखाई देने लगी हैं। मानवीय अभिज्ञान के दूसरे क्षेत्र समाज शास्त्र, राजनीति, विज्ञान,दर्शन और मीड़िया आज जिसतरह सामाजिक समग्रता अर्थात दलितों, अल्पसंख्यकों को केंद्र में रखकर अपनी सार्थकता और प्रासंगिकता सिद्ध कर रहे है - वे ही साहित्य की वर्ग-वर्ण केंद्रित स्वायंत्तता के सबसे बड़े खतरे हैं। वे धुस आएँगे तो साहित्य न शुद्ध रह पाएगा न स्वायत्त हमारा सारा कलावदी संघर्ष इन्हें छाँटने और अपने-आपको इनसे बचाने का बौद्धिक उपक्रम है। यह अपनी अहं - केंद्रित दुनिया के बाहर सांस्कृतिक बहुलतावाद का निषेध है, साहित्य को सिर्फ मध्यमवर्गीय अभिरुचियों और मर्दवादी औपनिवेशिक मूल्यों का गढ़ बनाए रखने की

हारी हुई लड़ाई है, जो कभी भाषा-सौष्ठव के नाम पर लड़ी जाती है तो कभी कला शील और सौंदर्य - बोध के नाम पर।१२'' इस प्रकार राजेंद्र यादव जी ने अपना साहित्यिक चिंतन प्रस्तुत किया हैं। वर्ष , २००३ की साहित्यिक परिस्थितियों को निम्नलिखित मद्दों के आधारपर प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

१.५.१ प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी के प्रसिद्ध कवि :-

हिंदी प्रेमियों के लिए यह गौरव की बात रही है कि, देश के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी के प्रसिद्ध कवि रहे हैं ' मेरी ५१ कविता' कवितासंग्रह उनके प्रधानमंत्री के कार्य काल में प्रकाशित हो चुका। भावुक सहृदयशील, संवेदनशील, प्रतिभा संपन्न, बहुमुखी व्यक्तित्व धारण करनेवाले प्रधानमंत्री पद पर आसनस्थ मा. अटल बिहारी वाजपेयी समस्त हिंदी पाठकों पर छाए रहें ।

१.५.२ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन :-

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी मुंबई और पूणे जिला शिक्षा मंड़ल कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय के द्वारा दि. ६ जनवरी और दि. ७ जनवरी, २००३ में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन चिंचवड़ पूणे में संपन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन जपान टोकियो विश्वविद्यालय के प्रा. तो शियो तनाका द्वारा किया गया। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री मा. विलासराव देशमुख, महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष और सांस्कृतिक कार्यमंत्री मा. रामकृष्ण मोरे, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय दिल्ली के अधीनस्थ भारतीय भाषा केंद्र प्रमुख प्रा. डॉ. गंगाप्रसाद ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ांई। हिंदी प्रेमियों के लिए प्रस्तुत सम्मेलन गौरव पूर्ण रहा।

१.५.३ हालावादी काव्यधारा के प्रवर्तक डॉ. हरिवंशराय बच्चन का निधन :-

हिंदी के प्रसिद्ध कवि के रुप में डॉ. हरिवंशराय बच्चन जी ने ख्याति प्राप्त की है उन्होंने अपने कार्यकाल में विभिन्न पदों पर कार्य किया। वे राज्यसभा के सदस्य रहे। ऐसे विश्वविख्यात कवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन ९६ साल की उम्र में दि. १८ जनवरी, २००३ में बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। यह घटना हिंदी प्रेमियों के लिए दिल - दहलानेवाली थी। ऐसे कवि को बच्चन प्रेमी जीवन पर्यंत भूल नहीं सकेंगे।

१.५.४ सातवाँ विश्व हिंदी साहित्य सम्मेलन :-

दि. ५ जून, से दि. ९ जून, २००३ में पारामारीबो (सुरीनाम) में सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन संपन्न हो गया । प्रस्तुत सम्मेलन के लिए ५०० प्रतिनिधि दुनिया से आए थे। दि. ६ जून, २००३ में सम्मेलन का उद्घाटन हो गया। सुरीनाम के राष्ट्रपति मा. आर. आर. बेनेरिशनयात ने उद्घाटन किया। इस दौरान अनेक ग्रंथों का प्रकाशन हुआ। इसीदौरान विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। इस प्रकार प्रस्तुत साहित्य सम्मेलन संपन्न हुआ।

१.५.६ भीष्म सहानी नहीं रहें

हिंदी कथात्मक साहित्य को अपनी विशिष्ट शैली के द्वारा अपना परिचय देनेवाले 'भीष्म साहनी' जी का निधन दि. ११ जुलाई , २००३ में हुआ।

भीष्म साहनी हिंदी के बहुचर्चित वरिष्ठ उपन्यासकार रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी पद, प्रतिष्ठा, पुरस्कार की लालसा हेतु साहित्य-सृजन नहीं किया। उन्होंने सही अर्थों में राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा की । उनकीसाहित्य साधना देखकर भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार, शलाका , सम्मान, सोव्हिएत लँड़ नेहरु आदि पुरस्कारों से भी उन्हे अलंकृत किया गया।

.६) शैक्षिक परिस्थिति :-

भूमंडलीकरण की वजह से भारत कें शिक्षा क्षेत्र में विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालय अलग-अलग प्रकार के पाठ्यक्रम लेकर भारत में आए। भारत के छात्रों को भी मेडिकल, इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों में सहजता के साथ प्रवेश मिलने लगे। वर्ष , २००३ में भारत के शिक्षा क्षेत्र में जो नए-नए प्रयोग किए , उनका परिचय निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है।

१.६.१ शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े वर्गो के छात्रों के लिए परियोजना :-

शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े वर्गो के छात्रों के लिए १० वी पंचवार्षिक परियोजना में दो नई योजना शुरु की गई। 'सर्व शिक्षा अभियान' को छोड़कर स्त्री साक्षरता के संबंध में पिछड़े वर्गों के छात्रोंके २१९८ गुठों को देशभर से चुना गया। स्त्री साक्षरता का अनुपात भारत में कम है।

१.६.२ बी.एड्. के लिए भी केंद्रीय परीक्षा पद्धति :-

हायस्कूल के लिए जो अध्यापक होते हैं , उनके लिए बी.एड्. होना अनिवार्य है। आजकल देश में शिक्षा का प्रचार, प्रसार अधिक हो रहा है। अत्एव माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों के हजारों पद रिक्त हैं। बी.एड्. के लिए प्रवेश पाने के लिए पहले डोनेशन देकर प्रवेश लिया जाता था। महाराष्ट्र सरकार ने इस वर्ष बी.एड्. के लिए केंद्रीय प्रवेश परीक्षा पद्धति लागू की। जिससे बी.एड्. पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश दिया जाने लगा। यह शिक्षा क्षेत्र बहुत बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। जिससे शैक्षिक योग्यता प्राप्त करनेवाले बी.एड्. अध्यापकों को न्याय मिला।

१.६.३ नैक (N .A.A.C.)

राष्ट्रीय शिक्षा विषयक नीति कार्यक्रम के निर्देश के अनुसार और मा. सर्वोच्च

न्यायालय के आदेश के अनुसार नैक (National Assessment and Accredation Council) अर्थात् राष्ट्रीय मूल्याकंन व अधिमान्यता समिति संस्था की स्थापना दि. १६ दिसबंर, १९९४ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा की गई । विविध शैक्षिक संस्थाओं के महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों का शैक्षिक मूल्यांकन के यथायोग्य करना और उसीके आधारपर प्रस्तुत महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय को उचित ग्रेड देना नॅक का प्रमुख कार्य है।

प्रस्तुत कार्यक्रम के तहत् वर्ष, २००३ में महाराष्ट्र के अधिकांश महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों ने नैक द्वारा उचित ग्रेड प्राप्त की है।

१. ७) वर्ष, २००३ में घटित विशेष उल्लेखनीय घटना, प्रसंग :-

वर्ष , २००३ में घटित कुछ विशेष उल्लेखनीय घटना, प्रसंगों का विवरण निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है।

१.७.१ एन.आर. नारायणमूर्ति को सम्मानित किया गया :-

दि. ३ जनवरी, २००३ को भारतीय विज्ञान कॉंग्रेस को ९० वर्ष पूरे हुए। इसी उपलक्ष्य में, 'इन्फोसिस' के संस्थापक एन.आर. नारायणमूर्ति को 'सूचना और तंत्रज्ञान क्षेत्र में अपने योगदान के लिए "जवाहर नेहरु जन्म शताब्दी"पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री. नारायणमूर्ति को यह पुरस्कार भारत के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी की उपस्थिति में दिया गया। इस समय अपने भाषण में वाजपेयी ने कहा था कि, - ''विज्ञान और तंत्रज्ञान क्षेत्र नें देश के लिए उन्नति का मार्ग सब लोगों के लिए खुला किया है।''१३ इस प्रकार विज्ञान और तंत्रज्ञान समाज उपयोगी रहे हैं।

१.७.२. कॅस और सेट टॉप बॉक्स :-

दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने के लिए घर में आनेवाली केबल सेट टॉप बॉक्स को जोडने के बाद सेट टॉप बॉक्स को चैनल के माध्यम से टी.वी. को जोड़ा जाता है। सेट

टॉप बॉक्स में एक सांकेतिक क्रमांक लगाया जाता है। वह एम.एस. ओ. के कंट्रोल युनिट में होता है। इसलिए केबल ग्राहक कितने चैनल देखना चाहता है। जिसका उसे अपना मासिक बिल देना पडता है। कॅस (सी.ए.एस.) दि. १५ जुलाई, २००३ से दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चैन्नई इन चार महानगरों लागू किया गया। कैस और सेट टॉप बॉक्स की सहायता से दूरदर्शन के दर्शकों को कम से कम शुल्क में अधिक से अधिक और अपने पसंद के चैनल देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

१.७.३. <u>५७ वे स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में महामहिम राष्ट्रपति तथा मा. प्रधानमंत्री का देश के नाम संदेश :-</u>

दि. १५ , अगस्त, भारत का स्वाधीनता दिवस पूरे भारत वर्ष में बड़े हर्षोउल्हास के साथ मनाया जाता है। मुख्य कार्यक्रम दिली के लाल किले पर होता है। इस वर्ष दि. १५ अगस्त, २००३ में देश को स्वाधीनता प्राप्त करके ५७ वर्ष पूर्ण हो गए। इसी उपलक्ष्य में देश के महामहीम राष्ट्रपति मा. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने देश के नाम संदेश दिया था। उन्होंने अपने संदेश में कहा था कि वर्ष,"२०२० में भारत विकसित राष्ट्र बनेगा।''१४ ऐसा विश्वास ''उन्होंने दिलाया। देश में युवा पीढ़ि का योगदान इसमें महत्त्वपूर्ण होगा। नदी जोड़, परियोजना नागरीकरण, सूचना तंत्रज्ञान क्षेत्र में हो रहा विकास , पर्यटन आदि का उल्लेख महामहीम राष्ट्रपति ने अपने संदेश में किया।

लाल किले से अपना भाषण देते हुए प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी ने फिर एक बार पाकिस्तान की ओर मैत्री का हाथ बढ़ाया। उनका कहता थो कि भारत-पाक के नागरिक शांति मार्ग के पक्षधर है। सीमापार से होनेवाला आतंकवाद समाप्त होना चाहिए ऐसा उनका मत थो। इसी उपलक्ष्य में मा, प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों के लिए विविध परियोजना की घोषणा की।

१.७.४ **पुरस्कार, सम्मान :-**

समाज में विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अनेक लोग कार्यरत रहते है। कुछ सामाजिक संस्थाओं की ओर से श्रेष्ठ कार्य करनेवाले व्यक्तियों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता और उन्होंने अपने क्षेत्र में जो कार्य किया है, उसको समाज के सामने लाने की कोशिश की जाती है,और उनको प्रोत्साहित किया जाता है।

१.७.४.१ **पुरस्कारों से सम्मानित वैज्ञानिक :-**

रेमन मॅगसेसे पुरस्कार की घोषधा दि. ३० जुलाई, २००३ को हुई। यह पुरस्कार के लिए ७ आशियाई व्यक्तियों को चुना गया जिसमें २ भारतीय है। उसमें भारतीय चुनाव आयोग के प्रमुख जे.एम. लिंगडोह और शांता सिन्हा को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

१.७.४.२ दि. ७ अक्टूबर, २००३ में पदार्थ विज्ञान में 'पुंजकीय भौतिकी' विषय में उल्लेखनीय कार्य करने पर पदार्थ विज्ञान 'नोबेल पुरस्कार' ॲलेक्सी अब्रिकोसोव, व्हिटले गिंझबर्ग और ॲथनी लेगेंट इन तीन वैज्ञानिकों दिया गया।

१.७.४.३ दि. ८ अक्टूबर, २००३ में पीटर ॲग्रे और रॉड्रिक मॅक कनॉन को वर्ष, २००३ का रसायनशास्त्र के कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया। दि. ६ अक्टूबर, वर्ष २००३ में अमेरिका के वैज्ञानिक पॉल सी. लॉटरेबर और ब्रिटिश वैज्ञानिक पीटर मॅन्सफिल्ड को वैद्कीय शास्त्र का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया।

१.७.४.४ दि, ११ अक्टूबर, २००३ में कानून तज्ञ शिरीनइबादी को शांति के लिए 'नोबेल पुरस्कार' प्रदान किया।

१.७.५ **राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड :-**

वर्ष, २००३ राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड का सुवर्ण महोत्सवी वर्ष रहा है। इस वर्ष राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड से सम्मानित किया गया उनका विवरण इस प्रकार से है।

''दी लिजंड ऑफ भगतसिंग'' फिल्म में भगतसिंग की भूमिका के लिए फिल्म अभिनेता अजय देवगण को 'बेस्ट ॲक्टर' में पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फिल्म अभिनेता शाहरुख खान की प्रमुख भूमिका की फिल्म 'देवदास' को पाँच अवॉर्ड मिल गए। 'कोंकणा शर्मा' को बेस्ट अभिनेत्री का अवॉर्ड़ मिला।

१.७.६ **इन्सॅट का प्रक्षेपण :-**

भारत ने विज्ञान के क्षेत्र में अपने बलबूते पर अच्छी प्रगति की है। दि. २८ सितंबर, २००३ को फ्रेंच गियान के कौरोड अंतरिक्ष स्थानक से इन्सॅट ३ई का सफल रुप से प्रक्षेपित, किया। प्रस्तुत उपग्रह की सहायता दूरदर्शन और दूरसंचार क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगी। उसका कार्यकाल १५ वर्ष का है। वरिष्ठ शास्त्रज्ञ जी. माधवन नायर और इस्त्रो के अध्यक्ष डॉ. के. कस्तुरीरंगन ने इन्सॅट ३ई को अंतरिक्ष में छोड़ने पर आनंद व्यक्त किया।

१.७.७ **भारत का परमाणु कार्यक्रम :-**

भारत का परमाणु कार्यक्रम इस वर्ष की विज्ञान क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है। भारत के प्रधानमंत्री मा. अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत परमाणु शस्त्रास्त्र धारी देश बन गया है, ऐसी घोषणा की। आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए, भारत के पास परमाणु शस्त्रास्त्र का होना जरुरी है, ऐसा उनका मत था ।

इस प्रकार वर्ष, २००३ में घटित विशेष उल्लेखनीय घटना, प्रसंग रहें हैं । जिन्होंने समस्त वर्ष भर के भारतीय जनमानस पर हावी होने का कार्य किया है।

'नया ज्ञानोदय'

हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में भारत वर्ष में प्रकाशित हिंदी की मासिक पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी में मासिक पत्रिकाओं की एक लंबी परंपरा चलती आई हैं। आज हिंदी में सैकडों की संख्या में मासिक पत्रिकाए प्रकाशित हो रही है। पत्रिका निकालना, प्रकाशित करना सहज बात है। लेकिन उसे चलाना बहुत कठिन तथा श्रमसाध्य कार्य है। 'ज्ञानोदय' सन १९४९ में कलकत्ते से निकलता था। जिसके संस्थापक श्रीमती रमा जैन श्री साहू शांतिप्रसाद जैन रहे हैं। जिन्होंने ''भारतीय ज्ञानपीठ संस्था'' की नींव रखी थी। ज्ञानोदय का ''जन्म ऐसी संस्था से हुआ थो जो ज्ञान की अनुपलब्ध निधि को खोजने और मौलिक साहित्य को लोकहित में प्रकाशित करने के लिए कटिबद्ध थी। ''लेकिन किसी कारणवश सन्, १९७० में बनारस में 'ज्ञानोदय' का प्रकाशन बंद हुआ। लंबी अवधि के बाद करीब ५३ साल के अंतराल में सन, २००३ में ''नया ज्ञानोदय'' को प्रकाशन प्रारंभ हुआ। हिंदी में बड़े उत्साह के साथ प्रस्तुत पत्रिका का स्वागत हुआ। भारत कें साथसाथ विदेशों में भी हिंदी प्रेमियों ने बड़े हर्षोल्हास के साथ प्रस्तुत पत्रिका का स्वागत किया और आज विदेशों में भी ''नया ज्ञानोदय '' के हिंदी प्रेमी पाठक इसका हर महीने इंतजार करते हैं। 'नया ज्ञानोदय' हिंदी की एकमात्र मासिक साहित्यिक पत्रिका हैं। जिसमें हिंदी साहित्य की विविध-विधाओं को, हिंदी साहित्य के विविध आयामों को समसामईक घटनाओं, प्रसंगों को निड़रता के साथ प्रस्तुत किया जाता हैं।

''नया ज्ञानोदय'' के संपादकीय मंतव्य में संपादक देश-विदेश की साहित्यिक गतिविधियों को अत्यंत आकर्षक शैली में प्रस्तुत करते हैं। जो पढ़ने के लिए हिंदी के पाठक लालयित होते हैं।

''नया ज्ञानोदय'' के अनुक्रम में जो विषय, विधागत, साहित्यिक विशेषताएँ होती है, उनपर प्रकाश डाला जा रहा है। 'पंचायत' नामक विभाग में समकालीन विमर्श पर चर्चा की

जाती है। भारत के ज्वलंत समस्याओं को लेकर समाज चिंतक हिंदी प्रेमियों को एक नई दिशा देने के लिए अपना मंतव्य प्रस्तुत विभाग में प्रस्तुत करतें हैं। 'साक्षात्कार' विभाग में हिंदी के जानेमाने साहित्यकारों से की गई दुर्लभ बातचीत प्रस्तुत विभाग में हिंदी के पाठकों को पढ़ने मिलती हैं । जिससे हिंदी के लेखकों के जीवन की अंतरंग की पहचान हिंदी पाठकों को होती हैं। 'प्रासंगिकी' विभाग में तत्कालीन गतिविधियों से संबंधित विचार मंथन प्रस्तुत विभाग में पढने मिलता है। 'कहानी' इस विधा विभाग में हिंदी कें सुप्रसिद्ध, बहुचर्चित, लोकप्रिय कहानीकारों की कहानियाँ हिंदी पाठकों को पढ़ने मिलती हैं। ''कविता'' विभाग में हिंदी के कवियों द्वारा लिखित हिंदी की बहुचर्चित कविताओं को प्रस्तुत विभाग में प्रकाशित किया जाता हैं। ''स्मरण '' विभाग में दिवंगत हिंदी साहित्यकारों संबंधी संस्मरणात्मक जानकारी प्रस्तुत विभाग में होती है। ''जीवित किवदंती'' विभाग में तत्कालीन गंभीर विषय को लेकर मंतव्य विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं। "ललित निंबध"विभाग में ललित निबंध' प्रस्तुत किए जाते हैं। 'भाषांतर विभाग' में विभिन्न भारतीय भाषाओं से हिंदी में भाषांतरित, कहानियाँ, कविता लघु, कथाओं का भाषांतर हिंदी में प्रस्तुत किया जाता हैं। 'बाराखडी विभाग' में समाज के किसी विषय को लेकर हल्के-फुलके ढ़ंग से उसपर व्यंग प्रस्तुत किया जाता है। ''पुस्तक समीक्षा'' विभाग में हिंदी के नए पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत की जाती हैं। "नया ज्ञानोदय"ने हिंदी में साहित्यकारों की एक नई पीढ़ि को जन्म दिया है। इस प्रकार प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित रचनाकारों के पते भी दिए जाते हैं। साथ ही साथ उसका मुखपृष्ठ आकर्षक होता है। प्रस्तुत पत्रिका में प्रसंग के अनुकूल ऐसे चित्र दिए जाते हैं। जिससे ''नया ज्ञानोदय'' पत्रिका हिंदी पाठकों के गले का हार बन गई हैं। इसके साथ-साथ अब तक प्रकाशित ''नया ज्ञानोदय'' से संबंधित विभिन्न साहित्यिक विषयों पर भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोधकार्य संपन्न हो रहे हैं। ऐसी श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका के वर्ष के बारह अंक सिर्फ दो सौ रुपयों में प्राप्त किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष :-

वर्ष, २००३ में राजनीति, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियों की कुछ घटना, प्रसंगों ने समस्त वर्ष पर मानो अधिकार जताया हो। वर्ष, २००३ की राजनीतिक परिस्थिति का अवलोकन करने पर पता चलता है कि, इस वर्ष केंद्र, में मा. अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्त्व में सरकार सत्ता आई थी। अपने कार्यकाल में उन्हे कई संकटों का सामना करना पडा.। इस वर्ष आतंकवादी गतिविधियों में कुछ कमी नहीं रही। 'ऑपरेशन सर्प विनाश' में करीब २०० आतंकवादियों को मार गिराया। राजनीति में सच्चरित्र के लोगों का होना चाहिए। इसलिए मा. सर्वोच्च न्यायालय को दखल अंदाजी करनी पडी। भारत-पाकिस्तान के बीच 'बागलीहार' परियोजना पर कोई ठोस रुप से निर्णय नहीं हुआ। यह चर्चा अधूरी रही। भारत-पाक के बीच दिल्ली-लाहौर के दरम्यान सीधी बस सेवा शुरु की गई।

जिससे दोनों देशों के बीच विविध खेलों की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। भारत को धमकाने के लिए पाकिस्तान ने आतंकवाद का साथ दिया। जिसकी निंदा की गई। मा. सुप्रीम न्यायालय ने उत्तर प्रदेश की भूतपूर्व मुख्यमंत्री मा. सुश्री. मायावती के विरोध ताज कॉरिडॉर मामले में एफ.आय.आर. दाखिल किया। इस्त्रायल के प्रधानमंत्री मा. एरियल शेरॉन भारत दौरे पर आए। जिससे दोनों देशों के बीच अपसी संबंध मजबूत हो गए। भारत-श्रीलंका के बीच आर्थिक सहयोग पर चर्चा की गई। श्रीलंका में इस वर्ष कुछ काल के लिए आपात्काल घोषित किया गया था। संसद पर हमला करनेवाले दोषियों को इस वर्ष मौत की सजा सुनाई गई। २००३ की विश्व स्तर की प्रमुख घटनाओं में विश्व संसदीय सम्मेलन महत्त्वपूर्ण रहा। अर्न्तराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की स्थापना हो गई। जिसमें अर्न्तराष्ट्रीय अपराधिक मामलों पर न्याय मिलेगा। अमेरिका की साम्राज्यवादी भूमिका से ही अमेरिका ने इराक युद्ध की घोषणा की जिससे पूरा विश्व आतंकित बन गया था। जिसका कई देशों ने विरोध किया।

तालिबान का उन्मूलन करने के लिए अफगान के साथ अमेरिका ने युद्ध किया था। इसकी भी कई देशों ने कठोर निंदा की।

इस वर्ष सामाजिक परिस्थिति आशादायक नहीं रही - घोटाले, देशद्रोह, गरीबी, भूखमरी आदि घटनाओं से सामाजिक स्वास्थ्य खराब रहा। इस वर्ष भारतीय वंश की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला की मृत्यु विश्वस्तर पर दिल दहलाने वाली घटना रही। इस वर्ष मानव क्लोन बनाने का प्रयास किया गया, जिसका कुछ शास्त्रज्ञोंने विरोध किया। जाली मुद्रांक घोटाले में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी तथा राजनीति के बड़े-बड़े नेतागण भी शामिल थे। दिल्ली के उपहार गृह में लगी आग में मृतकों को करील ६ वर्ष के बाद हर्जाना प्राप्त हुआ। तेजस हवाई जहाज का सफल प्रयोग किया गया । मुंबई से अमृतसर जानेवाली फ्रेंटियर मेल में आग लगने से १०० से अधिक यात्रियों की मृत्यु हो गई। प्रस्तुत हादसे में जीवित तथा वित्त हानि हो गई थी। विश्व स्वास्थ्य संघठन ने धूम्रपान का विरोध करके समाज धूम्रपान मुक्त रहे। इस दृष्टि से विशेष प्रयास किए। सार्स जैसी नई बीमारी, नई मुसीबत लेकर आई। राजनीतिक दलों ने महिला आरक्षण का विरोध किया मंच पर सामाजिक समानता की बात करनेवाले नेता लोकसभा, राज्यसभा में महिला आरक्षण का विरोघ करने लगे । गरीब तथा वृद्ध लोगों केलिए नई बीमा योजना शुरु की गई। जिससे वृद्ध, गरीब लोगों का समाज में आर्थिक सहाय्यता भी प्राप्त हुई। एच.आय.व्ही. एड्स की रोकथाम के लिए सब राजनीतिक दल एक मंचपर आए। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में देश विरोधी तत्त्वों ने दो बम विस्फोट किए जिससे ५२ लोगों की मृत्यु हो गई।

रिर्सोसएट का सफल परीक्षण किया गया। सरकारी कर्मचारियों को हड़ताल पर जाने का संविधानिक अधिकार नहीं ऐसा आदेश मा. सुप्रीम कोर्ट ने दिया। इन्सॅट प्रक्षेपण तथा भारत के परमाणु कार्यक्रम से भारत विज्ञान के क्षेत्र में शीर्षस्थ बना गया।

भूमंड़लीकरण की चपेट में आकर भारत की आर्थिक परिस्थिति, २००३ में मिली - जुली रही। वर्ष, २००३ के केंद्रीय बजट ने आम आदमी के लिए नई-नई परियोजनाएँ शुरु की

। V.A.T. अर्थात् 'वॅट' लागू किया गया। निजीकरण का विविध कर्मचारी संघठनों ने विरोध किया। भारत आर्थिक महासत्ता बनेगा ऐसी भविष्यवाणी भी की गई। विश्व व्यापार संघठन की कानकून परिषद का सफल आयोजन हुआ। सामाजिक समानता के आधारपर आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गो के लोगों के लिए आरक्षण रखा गया। नई सेवा निवृत्ति वेतन योजना शुरु की गई। इस वर्ष भारतीय सहकार आंदोलन शती महोत्सव बड़ें हर्षोल्हास के साथ मनाया गया।

'भूमि परियोजना से किसानों को राहत मिली । 'सिक्कीम बिजली परियोजना' से ५१० मॅगावॅट बिजली प्राप्त हुई। औद्योगिक क्षेत्र के कर्मचारियों को सेवा निवृत्ति वेतन योजना लागू की गई। जिससे कर्मचारियों में खुशी की लहर आ गई। भूमंड़लीकरण के कारण भारत का कृषि क्षेत्र प्रभावित हुआ। अन्य क्षेत्र भी भूमंडलीकरण से प्रभावित रहे। 'नदी जोड़ परियोजना" का प्रारंभ इस वर्ष हुआ। प्रस्तुत परियोजना समस्त भारतवासियों को फायदेमंद होगी। केंद्र में हिंदूत्ववादी सरकार सत्ता में होने के कारण हिंदूत्ववादी कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर आ गई। भोजशाला मामले के कारण हिंदू-मुस्लिमों ने विवाद उठा । बाबरी मस्जिद मामले में मा.सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के अनुसार पुरातत्त्ववेताओं को निर्देश दिया कि, प्राचीन काल में बाबरी मस्जिद की जगह पर क्या था ? कुंभ मेले की दुर्घटना में कई लोग मारे गए। मदर तेरेसा को संत पद से मम्मानित किया गया। साहित्यिक क्षेत्र में इस वर्ष 'कवियों में प्रधानमंत्री और प्रधानमंत्रियों में कवि' यह कथन सार्थक करनेवाले मा. वाजपेयी जी हिंदी के श्रेष्ठ कवि रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन चिंचवड़ में आयोजित किया गया। डॉ. हरिवंशराय बच्चन और भीष्म साहनी का निधन हुआ। सातवाँ विश्व हिंदी साहित्य सम्मेलन सुरीनाम में आयोजित किया गया।

इस वर्ष की विशेष उल्लेखनीय घटनाओं में मा. नारायणमुर्ति को (संस्थापक, इन्फोसियस) को तंत्र विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर उन्हे नेहरु जन्म शताब्दी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'कॅस' सेट-टॉप बॉक्स ने मनोरंजन के क्षेत्र में खुशी की लहर आ गई। ५७ वा स्वाधीनता दिवस खुशी के साथ मनाया गया। जे.एम. लिंगडोह, शांता

सिन्हा को रेमन मॅगसेस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हिंदी फिल्म अभिनेता अजय देवगण को क्रमश: 'देवदास' और 'दि लिजंड़ ऑफ भगतसिंग' फिल्मों में उनकी भूमिकाओं पर उन्हें 'राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया।

शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े वर्गो के लिए नई-नई परियोजना शुरु की गई। बी.एड्. के लिए 'केंद्रीय परीक्षा पध्दति' का प्रारंभ किया। 'नॅक' के द्वारा महाविद्यालय और विश्वविद्यालय की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाने लगा।

'नया ज्ञानोदय' पत्रिका लंबे पुनर्प्रकाशन अंतराल के बाद प्रभाकर श्रोत्रिय के संपादन में फरवरी, २००३ में पुनर्प्रकाशित हुई। प्रस्तुत मासिक पत्रिका ने साहित्यकारों की एक नई पीढ़ी का निर्माण किया हैं। साहित्य के विविध आयामों, विधागत विशेषता पर लेखन प्रस्तुत करनेवाली हिंदी की पत्रिकाओं में 'नया ज्ञानोदय' शीर्षस्थ है। प्रस्तुत मासिक पत्रिका अपने युग के अनुकूल समसामईक विषयों को लेकर चलनेवाली हैं।

15891

संदर्भ ग्रंथ सूची

१	दैनिक सकाल (दि. २८ दिसबंर २००३) मागोवा ले. वसंत पटवर्धन हिंदी अनुवाद	पृ-३
२	"नया ज्ञानोदय" (मई, २००३) सं. प्रभाकर श्रोत्रिय संपादकीय	पृ-६
३.	'हंस'सं. राजेंद्र यादव (जनवरी, ०३) संपादकीय	पृ-५
४.	कॉम्पेटिशन सक्सेस रिव्यू (मार्च २००३) हिंदी अनुवाद	पृ-२९
५.	वही वही (जुलाई,२००३) हिंदी अनुवाद	पृ-१४
६.	वही वही (सितबंर, २००३) हिंदी अनुवाद	पृ-३८
७	दैनिक सकाल (दि.२१, दिसबंर, २००३)मागोवा ले. वसंत पटवर्धन (हिंदी अनुवाद)	पृ-५
८.	कॉम्पेटिशन सक्सेस रिव्यु (जून, ०३) हिंदी अनुवाद	पृ-३०
९	दै. सकाल (२८, दिसबंर,२००३) मागोवा, उद्धव भडसाळकर	पृ-२
१०	सामान्य अध्ययन - आनंद पाटिल (हिंदी अनुवाद)	पृ- ६४४
११	'हंस', सं. राजेंद यादव (अक्टूबर,२००३)(संपादकीय)	पृ-५
१२	वही वही जून २००३ वही	पृ-९
१३	स्पर्धा परीक्षा (मराठी पत्रिका (जनवरी, २००३))	पृ ८
१४	कॉम्पेटिशन सक्सेस रिव्यू (अक्टूबर, ०३) हिंदी अनुवाद	पृ-३०
१५	"नया ज्ञानोदय," (फरवरी,२००३) संपादक प्रभाकर श्रोत्रिय(संपादकीय)	पृ-५